हरियाणा में इनैलो में उठापटक....

चौधर की लड़ाई हरियाणा में इनैलो और चौटाला खानदान को डुबो देगी

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

हरियाणा में चौटाला खानदान की लड़ाई की तस्वीर पल-पल बदल रही है। अब यह साफ हो चुका है कि जेल से परोल पर बाहर आने के बाद डॉ. अजय चौटाला की सक्रियता ने इंडियन नैशनल लोकदल के सुप्रीमो ओम प्रकाश चौटाला और उनके छोटे बेटे अभय चौटाला की नींद हराम कर दी है। लेकिन यह लड़ाई और भी कई गुल खिलाने जा रही है। जिस पर हम लोग इसी रिपोर्ट में आगे चर्चा करेंगे।

अजय चौटाला ने जेल से बाहर निकलने के बाद सबसे पहले यह घोषणा की वह 17 नवंबर को इनैलो की कार्यकारिणी की बैठक जींद में करेंगे और उसी दिन अधिवेशन होगा। अजय की यह घोषणा रणनीतिक थी। अभय चौटाला गुट दबाव में आ गया।

पहले ही कर डाली कार्यकारिणी बैठक

अभय चौटाला ने खतरे को भांपते हुए शुक्रवार को ही सिरसा के तेजाखेड़ा फार्महाउस पर 13 विधायकों, दो सांसदों और कुछ पदाधिकारियों को लेकर पार्टी कार्यकारिणी की बैठक कर डाली। इस बैठक का मकसद यह बताना था कि सारे पार्टी विधायक और सांसद अभय चौटाला के साथ हैं। इस बैठक में विधायकों, सांसदों और पदाधिकारियों ने चमचागीरी की सारी हदें पार कर लीं। एक विधायक ने कहा कि हम तो ओम प्रकाश चौटाला के कहने पर खांसी तक रोक लेते हैं। ओम प्रकाश चौटाला ने अभय को कमान सौंपी है तो हम उन्हीं के साथ खड़े हैं। एक ने कहा कि जब ओमप्रकाश चौटाला और अजय चौटाला जेल चले गए तो पार्टी को अभय चौटाला ने ही संभाला।

अजय चौटाला के इवेंट का चक्रव्यूह

अभय चौटाला ने विधायकों, सांसदों और पदाधिकारियों के मुंह से अपने पक्ष में कार्यकारिणी बैठक में सब कुछ कहलवा लिया लेकिन दरअसल अजय चौटाला जिस चक्रव्यूह में अभय को फंसाना चाहते हैं, वह रणनीति के मामले में अपने भाई को पछाड़ चुके हैं।

अजय चौटाला ने 17 नवंबर की जींद कार्यकारिणी बैठक से ठीक पहले 16 नवंबर को ऐलनाबाद में हरी चुनरी कार्यक्रम रखवा दिया है। इस कार्यक्रम की कमान अजय की पत्नी नैना चौटाला संभाल रही हैं। ऐलनाबाद दरअसल अभय चौटाला का चुनाव क्षेत्र है। इस प्रोग्राम की सफलता की आड़ में अजय यह संदेश देना चाहते हैं कि अभय को उनके अपने चुनाव क्षेत्र के लोगों ने भी खारिज कर दिया है। हरी चुनरी शब्द जानबूझ कर चुना गया है क्योंकि यह इनैलो का अपना कलर है और अगर ऐलनाबाद में 16 नवंबर को चारों तरफ हरी चुनरी नजर आई तो अभय चौटाला को बुखार आने के लिए काफी है।

अजय चौटाला शुक्रवार को हांसी में थे। वहां उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि अब पार्टी कार्यकर्ता तय करेंगे कि पार्टी किसके साथ खड़ी है। इस बयान का विश्लेषण बताता है कि अगर 17 नवंबर को जींद में अजय कैंप की आशा के हिसाब से ही भीड़ जुटती है तो संदेश साफ चला जाएगा कि इनैलो के असली हकदार अजय और उनके बेटे हैं। लेकिन इस प्रोग्राम में अगर विधायक और कार्यकर्ता नहीं जुटते हैं तो भी अजय कैंप के सामने अलग रास्ता चुनने के अलावा और कोई विकल्प नहीं होगा।

इसीलिए अजय चौटाला कैंप साथ ही साथ कई विकल्पों पर काम कर रहा है। जैसे इस कैंप के सांसद दुष्यंत चौटाला ने दक्षिण हरियाणा और खासकर अहीरवाल क्षेत्र के महत्वपूर्ण नेता राव इंद्रजीत सिंह से मुलाकात की। राव इंद्रजीत नाम के लिए केंद्र में मंत्री हैं लेकिन वहां उनका दम घुट रहा है और वह अपनी अलग पहचान बनाने के लिए बेकरार हैं। बहुत मुमकिन है कि राव इंद्रजीत और दुष्यंत मिलकर नई पार्टी लान्च करने की योजना बना रहे हैं।

अभय चौटाला भी है मास्टरमाइंड

इनैलो पर अजय गुट का कब्जा न हो सके, इसके लिए अभय चौटाला ने कई रणीति बनाई है। उनके द्वारा 9 नवंबर को तेजाखेड़ा में जबरन की गई कार्यकारिणी बैठक उसी का हिस्सा थी। बहुत मुमकिन है कि अभय चौटाला 16 नवंबर को या उसके आसपास एक बार फिर कार्यकारिणी की बैठक बुलाए। मकसद एक ही है कि 17 नवंबर को जींद जाने से किस तरह लोगों को रोका जाए। इसके लिए पार्टी के विधायकों और पदाधिकारियों को हरियाणा के बाहर गोवा या किसी अन्य पर्यटन स्थल ले जाया जाए।

इसके अलावा अभय चौटाला 1 दिसंबर से रथ यात्रा शुरू कर रहे हैं। यह रथ यात्रा हरियाणा के हर जिले, तहसील और प्रमुख कस्बों में जाएगी। इस रथ यात्रा का एकमात्र मकसद कार्यकर्ताओं की भीड़ दिखाना है, जिसके जरिए बताने की कोशिश की जाएगी कि कार्यकर्ता किसके साथ हैं। इनैलो की राजनीति में यह रथ यात्रा मील का पत्थर साबित हो सकती है।

चौधर की लड़ाई और जाट

चौटाला खानदान में चौधर की लड़ाई का सीधा असर हरियाणा की जाट राजनीति पर पड़ने जा रहा है। अभी तक जाटों के वोट और नोट के लिए कांग्रेस और इनैलो में सीधी लड़ाई थी। लेकिन अजय चौटाला गुट के उभरने और पार्टी बनाने की स्थिति में जाटों के वोट तीन जगह बंटेंगे। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मुकाबले हरियाणा के जाट भाजपा को हमेशा खारिज करते रहे हैं। लेकिन आज जो हालत चौटाला के दोनों बेटों और कांग्रेस ने कर दिया है उससे जाट वोटों के विभाजन की बड़ी लकीर खिंच गई है। अगर जाट तीन जगह बंटते हैं तो इससे उनकी चौधर की लड़ाई कमजोर तो पड़ेगी ही, साथ ही जाट वोटर हाशिए पर भी जा सकते हैं।

इस लड़ाई की शुरुआत करना वाला भी चौटाला खानदान ही है। ओमप्रकाश अगर कान भरने वालों के आवेश में आकर दुष्यंत, दिग्विजय और अजय को पार्टी से निकाल सकते हैं तो यह तय है कि बहुत जल्द जाट मतदाता हाशिए पर चले जाएंगे। क्योंकि तब उनकी बात कहने वाला और सुनने वाला कोई नहीं होगा।

आज इतिहास अपने आपको दोहरा रहा है। ओम प्रकाश चौटाला ने ताऊ देवीलाल की जिंदगी में ही कार्यर्ताओं के दम पर इनैलो पर कब्जा कर लिया था। यही स्थितियां अब है कि जरा सा इशारा मिले तो कोई न कोई गुट पार्टी पर कब्जा कर सकता है।

धन तेरस पर धन को तरसे उर्फ मोदी को श्रद्धांजलि नोटबंदी बरसी पर...

ग्राउंड जीरो से विवेक की रिपोर्ट

"कहते हैं वक्त हर जख्म भर देता है पर नोटबंदी का जख्म कुछ ऐसा है कि साल दर साल बढ़ता ही जा रहा है", पूर्व प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह ने इन शब्दों के साथ अपनी 'न बोलने न करने' वाली तोहमत के साथ वर्तमान प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी के शेखचिल्ली दावों पर भी एक जबरजस्त चोट कर दी।

यह खबर पढ़े जाने तक धनतेरस, दिवाली और नोटबंदी की बरसियां मनाई जा चुकी होंगी पर इन त्योहारों पर दिल मसोस रहे लोगों के दर्द को समझना हो तो किसी भी प्रभावित वर्ग को बातों से टटोलने भर की देर है।

धनतेरस के अवसर पर लगभग सभी राष्ट्रीय अखबारों ने गुरुग्राम में लगने वाले तीन-तीन किलोमीटर लम्बे जाम की तस्वीरें साझा कीं, पर किसी ने नहीं बताया कि इनके पीछे की असलियत क्या है। मजदूर मोर्चा की ग्राउंड जीरो टीम ने पड़ताल में पाया कि मनमोहन सिंह यूँ ही उपरोक्त कथन नहीं बोल गये।

पुरानी दिल्ली का सदर बाजार खुदरा खरीदारों और मध्यम वर्ग का पसंदीदा बाजार है और अगर मौका दिवाली का हो तो फिर ग्राहक और दुकानदार दोनों ही खरीदने और बेचने में कोई कसर नहीं उठा रखते। किसी भी वर्ष एक मेले सा दिखने वाला ये बाजार इस बार दिवाली के पूरे हफ्ते में कारोबार के लिहाज से फीका-फीका रहा।

सदर क्रोकरी हाउस पर काम करने वाले 45 वर्षीय नारायण की सुनें तो इस बार बाजार में ग्राहक ही नहीं है। ग्राहक क्यों नहीं है इसका कारण नारायण को नहीं पता पर हां उन्होंने इतना जरूर कहा कि जब पैसे होंगे जेब में तबै तो आएँगे ग्राहक, जब प्रधानमंत्री ने जेबवे काट ली तो गहंकी कहां से आएगा भाई साहब। भाग्य को कोसते हुए नारायण ने बताया कि पिछली दिवाली पर भी माहौल ऐसा ही था पर नोटबंदी से पहले ऐसा सन्नाटा नहीं होता था। यहाँ तक कि इस दुकान के लगभग हर कामगार ने इंसेंटिव के तौर पर 7 हजार रूपए उठाये थे पर इस बार 2 भी मिल जाएं तो गनीमत समझो।

शाह होटलवेयर के मालिक अनुभव की उम्र सिर्फ 26 वर्ष ही है पर अनुभव के मामले में खासे प्रगाढ़ दिखे। उन्होंने बताया कि नोटबंदी और जीएसटी की सबसे बड़ी मार उत्पादकों को लगी है, जिस कारण एक तो पीछे से माल की सप्लाई भी कम है और कुछ मांग भी हल्की ही चल रही है। दोनों का कारण पूछने पर, अनुभव के अनुसार, नोटबंदी ने जहाँ एक ओर छोटे उत्पादकों को मार डाला वहीं बाजार में लेबर को भी बहुत नुकसान पहुँचाया। क्योंकि ज्यादातर होटलों में लेबर असंगठित रूप से कार्यरत थी तो उसी दौरान कई होटल अपनी लेबर से हाथ धो बैठे और छोटे होटल बंद भी हुए बड़े स्तर पर। ऐसी सूरत में होटल के बर्तनों की मांग पर भी असर पड़ा और उत्पादक क्षेत्र पर भी ऐसा ही असर होने से रही सही कसर भी पूरी हो गई। दिवाली पर खाने के नए आउटलेट खुलते हैं पर दो साल से बाजार ठण्डा है।

सरकार का जीडीपी और ईज आफ डूइंग इंडेक्स में शानदार प्रदर्शन करने के दावों का हवाला देते ही फतेहपुरी के मशहूर मिठाई वाले मेघराज मिष्ठान के मालिक दयानंद अग्रवाल बोले, हम तो जानते नहीं ये क्या ड्रामा है पर हां धंधा मंदा है। अब इसे जो चाहो कहो। हालाकि उनकी दुकान पर भीड़ लगी थी जिसपर उनका कहना था कि भीड़ में कमी बेशक न दिख रही हो पर खरीदारी में कमी है।

यही बात खारी बावली के सुन्दर चोपड़ा ने भी कही। चोपड़ा के अनुसार अपने जीवन के सत्तर बसंतों में ऐसी मंदी वो भी ड्राई फ्रूट्स में उन्होंने कभी नहीं देखी। बाजार में ये जो भीड़ है वो सिर्फ रस्म अदायगी है बेटे। क्योंकि हर साल पुरानी दिल्ली आते रहे हैं लोग सामन लेने इसलिए इस साल भी आ गए वरना उनके पुराने ग्राहक जो कभी 20 हजार के सूखे फल लेते थे इस बार सिर्फ 5 या 6 हजार तक ही खर्च रहे हैं और कारण नकदी की कमी को बता रहे हैं।

करोल बाग में मोबाइल एक्सेसरीज के होल सेल सप्लायर गौरव यादव और प्रिंस कुमार 7 साल से अच्छा काम कर पा रहे थे पर जीएसटी की जटिलताओं ने इतना परेशान

कर रखा है कि धंधा कम और लिखत-पढ़त ही ज्यादा है, ऊपर से काम बिल्कुल भी नहीं है अब बाजार में। दुकान का किराया कहां से निकालें और दिवाली कैसे मनाएं, नहीं पता।

काम क्यों नहीं है, इसपर गौरव ने बताया कि एक्सेसरीज मार्किट पर अब चीन का लगभग एकाधिकार है। पहले गुजरात के राजकोट में उत्पादक हुआ करते थे पर नोटबंदी ने उनमें से भी काफी खत्म कर दिए। बचा अब एक विकल्प वो है चीन से माल लाना। चीन सारा माल कैश में देता है तो अब माल वही मंगा सकता है जिसके पास मोटा कैश हो। वहीँ लोकल उत्पादक माल उधार पर भी दे देता था जो अब मिल नहीं पा रहा इसलिए छोटे व्यापारी खत्म हो रहे हैं।

बात उपभोक्ता स्तर की करें तो थोक खरीरदार 5 पैसे का भी फर्क होने पर दुकान बदल लेता है सो छोटा होलसेल कैश न दे पाने के कारण अब रेट भी नहीं दे पा रहा। खुदरा व्यापारी बताता है कि बाजार में पहले के मुकाबले ग्राहक कम हैं और जो हैं वो ऑनलाइन ही ले रहे हैं। तो भई हमारा कोई काम नहीं इस सरकार को, ये तो बस जो पहले से हजार करोड़ छाप रहे हैं उनकी यार है।

धनतेरस पर फरीदाबाद का पुराना बाजार फूलों और मिट्टी के दियों से पटा पड़ा था। दुकानदारों से बात करने पर यहाँ भी वही समस्या और वही कारण मिला। हर दुकानदार यही कहता मिला कि इस बार धंधा बिल्कुल फीका है। यहाँ तक कि फूल और दिए वालों ने बताया दो साल पहले दिवाली वाले दिन तक लगभग सभी फूल बिक चुकने की कगार पर आ ही जाते थे पर अब ऐसा नहीं। कल तक जो फूल मजबूरन 40 रूपए किलो तक बेचे हैं उन्हें आज दिवाली पर 30 और शायद 20 तक भी बेच देंगे ताकि माल की लागत तो निकले। ऐसा पहले नहीं होता था पर अब ग्राहक उतनी मात्र में सामान ही नहीं ले रहा। जैसे हम रो रहे हैं सब रो रहे हैं।

सेक्टर 9 फरीदाबाद मार्किट के अपने खास सतपाल से दिवाली की राम राम पर ठंडा जवाब मिला। सतपाल बोले, भई दिवाली मुबारक हो और ये मुबारकबाद भी इसलिए दे रहा हूँ क्योंकि दस्तूर है वरना इस बार ऐसा कुछ नहीं जो मुबारकबाद लूँ या दूं। पता नहीं क्या हुआ है जो बाजार से ग्राहक ही गायब है। वरना दिवाली पर मैं अदरक लहसुन का पेस्ट न बेच रहा होता। हमें तो कभी फुर्सत ही नहीं होती थी पर अब फुर्सत ही फुर्सत है। दिल खुश नहीं है भाई इस बार। वो तो भला हो सुप्रीम कोर्ट का जो पटाखे बैन कर दिए वरना बालक और दिवाला निकाल देते मेरा।

इन बातों पर असली पुष्टि घर-घर ठेला लेकर कबाड़ उठाने वाले 50 वर्षीय सलीम ने कर दी। सेक्टर 9 के एक घर से थोड़ा सा टिन ले जाते सलीम से पूछा कि वो इस बार माल कहां बेचेंगे? सलीम ने बड़े हास्यास्पद तरीके से बताया कि भई नंगा नहाये क्या निचोड़े क्या? इतने को लेकर कहा जाऊंगा? किसी दूसरे कबाड़ वाले को देकर देसी मारूंगा आज। सुबह से सिर्फ ये मिला है वरना दिवाली पर सांस लेने की फुर्सत नहीं होती थी। हमसे बेहतर पल्लेदार हैं जो अब भी कुछ पा जाते हैं।

विस्तार से पूछने पर सलीम ने बताया कि पहले दीवाली पर लोग नए घर खरीदते थे तो वो तो अब इस सरकार में हो नहीं रहा। सबसे बड़ा काम उनका लोगों द्वारा घरों की मरम्मत कराने से चलता था, जिसमें ढेरों मलबा निकलता था। अब लोग खुद कमाई को तरस रहे हैं तो घर की क्या रंग-रोगन और मरम्मत करेंगे। जो थोड़ा बहुत मिल रहा है कबाड़ वो भी अब काम का नहीं रहा क्योंकि सरकार ने कबाड़ आइटम पर भी 18 प्रतिशत जीएसटी लगा दिया। इतना टेक्स देकर कबाड़ में छोटा कबाड़ी क्या कमायेगा?

बैंक से जुड़े डायरेक्ट सेल्स एजेंट के रूप में खुद को स्थापित कर चुके युवा अनमोल अग्रवाल से बाजार का हाल जानना और भी रोचक रहा। अनमोल ने बताया कि 2008-09 तक की मंदी में भी ऐसा नहीं हुआ जो अब हो रहा है। ऐसा नहीं है कि बाजार में मांग नहीं है। मांग को मोदी सरकार ने अपनी नीतियों से खत्म कर डाला। सरकार ने बैंक को इतना कमजोर कर दिया है कि बैंक लोन नहीं दे रहे जबकि बड़े शहरों में व्यापारी बैंक के भरोसे ही काम करते हैं। हजारों करोड़ों ले कर जो देश से भाग गए उनका सारा पैसा छोटा व्यापारी भर रहा है और उनके भागने में सारा हाथ इस सरकार का है। अब इस मुद्दे को छोड़ सरकार राम मंदिर में लगी है। जिस दिन ये सरकार जाएगी हिंदुस्तान की महामंदी की खबरें तभी बाहर आएंगी। तब तक ये दबाये बैठें हैं इन खबरों को वरना हम अभी बहुत बुरे दौर में आ चुके हैं।

भक्तों और उनके देवों का कहना है कि नोटबंदी से करदाताओं की संख्या में इजाफा हुआ है जबकि मोदी के 125 करोड़ देशवासियों में सिर्फ 1,40,139 करदाता ही एक करोड़ कमा पाते हैं। वित्त मंत्री जेटली का पुराना राग है कि नोटबंदी के फायदे लम्बे समय में दिखेंगे। वो न जाने दिखें न दिखें, पर इसके नुकसान तुरंत दिखाई दे रहे हैं। अर्थव्यवस्था में सरकार की जीडीपी 1.5 प्रतिशत तक लुढ़क गई है, साथ ही राष्ट्रीय हानि का अनुमान 2.25 लाख करोड़ है। जहाँ बड़े उद्योग इससे उबर रहे हैं वहीं असंगठित क्षेत्र पर अभी भी मार दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। मोदी के वित्त राज्य मंत्री अर्जुन मेघवाल ने हाल ही में कहा कि सरकार नोटबंदी के असर का कोई ऑडिट करने के मूड में नहीं है पर नोटबंदी के बढ़े फायदे हैं। इतने ही फायदे हैं तो करते क्यों नहीं ऑडिट? सरकार में शर्म होती तो कम से कम 120 लोगों की मौत के लिए ही माफी मांग चुके होते मोदी!

बाजार के लगभग हर तबके की राय एकसमान थी। अजीब बात है कि इतने के बाद भी हमारा बिकाऊ मीडिया धनतेरस पर होने वाले जाम को सरकार के पक्ष में प्रचारित करते हुए जबरजस्त खरीदारी का सूचक बता रहा है। जबकि सवाल ये है कि भीड़ तो रस्म अदायगी करेगी ही पर खरीदारी कितनी कर पा रही है? और यह भी कि बाजार का हर तबका रो क्यों रहा है? रही बात जीडीपी की तो जाम में खड़ी भीड़ तेल जला कर तेल कम्पनियों की सेल बढ़ा ही रही है, जिसपर सरकार भी मोटा मुनाफा कमा रही है। चौकीदार को चोर नहीं, शायद डकैत कहना ठीक होगा।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06